Stages of Growth and Development

Life begins at the moment of Conception. An individual passes with various stages of growth and development from birth to death. There are certain common developmental characteristics belonging to each stage. Age span for the human developmental stages can be divided into following manner in our Country —

Stage	Age
1. Pre-natal	Conception to birth
2. Infancy	Birth – 5 years
3. Childhood	5 – 12 years
4. Adolescence	12 – 18 years
5. Youth	18 – 25 years
6. Adulthood	25 – 55 years
7. Old Age	55 years to Death.

Stages of development according to Hurlock

Stage	Age
1. Prenatal	Before Birth
2. Early infancy	Birth – 14 Months
3. Later infancy	14 Months – 2 years
4. Childhood	2 – 11 years
5. Early Adolescence	11 – 13 years
6. Adolescence	13 – 17 years
7. Later Adolescence	17 – 21 years

Stages of development according to "Ross"

Stage	Age
1. Infancy	1 – 3 years
2. Early childhood	3 – 6 years
3. Later childhood	6 – 12 years
4. Adolescence	12 – 18 years

According to Kolesnic-

Stage	Age
1. Prenatal	Conception to birth
2. Neonatal	Birth – 30 or 4 Weeks
3. Early infancy	1 – 15 Months
4. Later infancy	15 - 30 Months
5. Early childhood	2½ – 5 years
6. Mid childhood	5 – 9 years
7. Late childhood	9 - 12 years
8. Adolescence	12 - 21 years

According to ~~A~~ Ernest Jones-

1. Infancy	Birth – 5 years
2. Childhood	5 - 12 years
3. Adolescence	12 - 18 years
4. Adulthood	After 18 years

During all these developmental stage human begins exhibit typical behavioural characteristics in all dimensions of behaviour and personality make-up which are specific to each stage. For the point of view of teachers and education infancy, childhood and adolescence are very important stages. Teachers can create learning opportunities on the basis of the pattern of growth and development exibited by the children of said stage

विकासकी अवस्थाएँ : शैशवावस्था

STAGES OF DEVELOPMENT : INFANCY

"The little human being is frequently a finished product in his fourth or fifth year "

-Freud (p 298)

शैशवावस्था : जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल

(INFANCY : THE MOST IMPORTANT PERIOD OF LIFE)

शैशवावस्था, बालक का निर्माण काल है। यह अवस्था जन्म से पाँच वर्ष तक मानी जाती है। पहले तीन वर्ष पूर्व शैशवावस्था और तीन से पाँच वर्ष की आयु उत्तर शैशवावस्था कहलाती है। न्यूमैन (J.Newman) के शब्दों में-"पाँच वर्ष तक की अवस्था शरीर तथा मस्तिष्क के लिये बढ़ी ग्रहणशील होती है। फ्रायड के शब्दों में-"मनुष्य को जो कुछ भी बनना होता है, यह चार पौच वर्षों में बन जाता है।

बालक के जन्म लेने के उपरान्त की अवस्था को शैशवावस्था कहते है। यह अवस्था पाँच दर्ष तक मानी जाती है। नवजात शिशुओं का आकार 19-5 इंच, भार 75 पॉड होता है। वह माँ के दूध पर निर्भर करता है। धीरे-धीरे यह आँखें खोलता है। उसका सिर धड़ से जुड़ा रहता है। बाल मुलायम एवं मौसपेशियों छोटी एवं कोमल होती है। जन्म के 15 दिन बाद त्वचा का रंग स्थायी होने लगता है।

नवजात शिशु क्रन्दन करता है। इससे फेफड़ों में हवा भर जाती है और उसकी श्वसन क्रिया आरम्भ हो जाती है। स्तनपान के कारण उसमें चूसने की सहज क्रिया प्रकट होती है, वह भूख के समय रोता है। वह 15-20 घंटे सोता है। धीरे-धीरे उसमें ये परिवर्तन स्थायी होने लगते हैं ।

बीसवीं शताब्दी को "बालक की शताब्दी कहे जाने का कारण यह है कि इस शताब्दी में मनोवैज्ञानिकों बालक और उसके विकास की अवस्थाओं के सम्बन्ध में अनेक गम्भीर और विस्तृत अध्ययन किये। इनके फलस्वरूप, वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सब अवस्थाओं में शैशवावस्था सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। उनका कहना है कि यह अवस्था ही वह आधार है, जिस पर बालक के भावी जीवन का निर्माण किया जा सकता है। इस अवस्था में उसका जितना ही अधिक निरीक्षण और निर्देशन किया जाता है, उतना ही अधिक उत्तम उसका विकास और जीवन होता है।

को व क्रो के अनुसार-"बीसवीं शताब्दी को बालक की शताब्दी' कहा जाता है। "The twentieth century has come to be designated as the century of the child." Crow and Crow : Child Psychology, p. 4.

शैशवावस्था के महत्त्व के सम्बन्ध में हम कुछ विद्वानों के विचारों को उद्धृत कर रहे हैं, यथा-

1. ऐडलर-"**बालक के जन्म के कुछ माह बाद ही यह निश्चित किया जा सकता है कि जीवन में उसका क्या स्थान है।**"

"One can determine how a child stands in relation to life a few months after his birth"

-Adler, Quoted by Valentine (p. 504)

2 स्ट्रैग-"जीवन के प्रथम दो वर्षों में बालक अपने भावी जीवन का शिलान्यास करता है। यद्यपि किसी भी आयु में उसमें परिवर्तन हो सकता है, पर प्रारम्भिक प्रवृतियाँ और प्रतिमान सदैव बने रहते हैं"। During the first two years of life, the child lays the foundation for his future, Although change is possible at any age, early trends and patterns tend to persist."

-Strang (p. 51)

3. गुडएनफ-"**व्यक्ति का जितना भी मानसिक विकास होता है, उसका आधा तीन वर्ष की आयु तक हो जाता है।**"

"One-half of an individual's ultimate mental stature has been attained by the age of three year

Goodenough (pp. 467-468)

शैशवावस्था की मुख्य विशेषताएँ

(CHIEF CHARACTERISTICS OF INFANCY)

शैशवावस्था, मानव विकास की दूसरी अवस्था है। पहली अवस्था गर्भकाल है जिसमें शरीर पूर्णतः बनता है और शैशवावस्था में उसका विकास होता है। शैशवावस्था की विशेषतायें इस प्रकार है -

1. **शारीरिक विकास में तीव्रता** (Rapidity in Physical Development)--शैशवावस्था के प्रथम तीन वर्षों में शिशु का शारीरिक विकास अति तीव्र गति से होता है। उसके भार और लम्बाई में वृद्धि होती है। तीन वर्ष के बाद विकास की गति धीमी हो जाती है। उसकी इन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों, आन्तरिक अंगों, मांसपेशियों आदि का क्रमिक विकास होता है।

2. **मानसिक क्रियाओं की तीव्रता** (Rapidity in Mental Activities)-शिशु की मानसिक क्रियाओं; जैसे-ध्यान स्मृति, कल्पना, संवेदना और प्रत्यक्षीकरण (Sensation and Percepion) आदि के विकास में पर्याप्त तीवता होती है। तीन वर्ष की आयु तक शिशु की लगभग सब मानसिक शक्तियाँ कार्य करने लगती हैं।

3. **सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता** (Rapidity in Learning Process)-शिशु के सीखने की प्रक्रिया में बहुत तीव्रता होती है और वह अनेक आवश्यक बातों को सीख लेता है। गेसल (Gescll) का कथन है-**बालक प्रथम 6 वर्षों में बाद के 12 वर्षों सेदुगुना सीख लेता है।**

4. **कल्पना की सजीवता** (Live Imagination)-कुप्पूस्वामी (Kuppuswamy) (p.75) के शब्दों में-"धार वर्ष के बालक के **सम्बन्ध में एक अति महत्वपूर्ण बात है-उसकी कल्पना की सजीवता। वह सत्य और असत्य में अन्तर नहीं कर पाता है। फलस्वरूप, वह असत्यभाषी जान पड़ता है।**

5. **दूसरों पर निर्भरता** (Dependence on Others)जन्म के बाद शिशु कुछ समय तक बहुत असहाय स्थिति में रहता है। उसे भोजन और अन्य शारीरिक आवश्यकताओं के अलावा प्रेम और सहानुभूति पाने के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। वह मुख्यतः अपने माता-पिता और विशेष रूप से अपनी माता पर निर्भर रहता है।

6. **आत्म-प्रेम की भावना** (Self Love)-शिशु में आत्म-प्रेम की भावना बहुत प्रबल होती है। वह अपने माता-पिता, भाई-बहन आदि का प्रेम प्राप्त करना चाहता है। पर साथ ही. वह यह भी चाहता है कि प्रेम उसके अलावा और किसी को मिले । यदि और किसी के प्रति प्रेम व्यक्त किया जाता हैं तो उसे उससे ईरष्य आ जाती है।

7. **नैतिकता का अभाव** (Lack of Morality)- पशु में अच्छी और बुरी, उचित और अनुचित बातो का ज्ञान नही होता है। वह उन्ही कार्यो को करना चाहता है, जिसमें उसको आनन्द आता है, भले ही वे अवांछनीय हो। इस प्रकार. उसमें नैतिकता का पूर्ण अभाव होता है। .

8. **मूलप्रवर्तियो पर आधारित व्यवहार** (Instinct based Behaviour) -शिशु के अधिकाश व्यवहार का आधार उसकी मूलप्रवृतियाँ होती है। यदि उसको किसी बात पर क्रोध आ जाता है, तो उसको अपनी वाणी या क्रिया द्वारा व्यक्त करता है। यदि उसे भूख लगती है, तो उसे जो भी वस्तु मिलती है, उसी को अपने मुंह में रख लेता है।

.9. **सामाजिक भावना का विकास (**Development of Social Feelings)-इस अवस्था के अन्तिम वर्षों में शिशु में सामाजिक भावना का विकास हो [जाता है। वैलेनटीन (Valentine) (p. 5229का मत है- चार या पाच वर्ष के बालक में अपने छोटे भाइयों, बहिनों या साथियों की रक्षा करने जी प्रवृति होती है। यह 2 से 5 वर्ष तक के बच्चों के साथ खेलना पसन्द करता है। यह अपनी वस्तुओं में दूसरों को साझीदार बनाता है। यह दूसरे बच्चों को अधिकारों की रक्षा करता है और में उनको सांत्वना देने का प्रयास करता है।

10. **दूसरे बालकों में रुचि या अरुषि** (Interest or disinterest in Others)-शिशु में दूसरे बालकों के प्रति रुचि या अरुचि उत्पन्न हो जाती है। इस सम्बन्ध में **स्किनर** (Sinner) (A-p. 83) ने लिखा है-"**बालक एक वर्ष का होने से पूर्व ही अपने साथियों में रुधि व्यक्त करने लगता है। आरम्भ में इस रुचि का स्वरूप अनिश्चित होता है, पर शीघ्र ही यह अधिक निश्चित रूप धारण कर लेती है और रुचि एवं अरुचि के रूप में प्रकट होने लगती है।**"

11. **संवेगों का प्रदर्शन**-शिशु मैं जन्म के समय उत्तेजना के अलावा और कोई सेवेग नहीं होता है। विजेज (Bridges) ने 1932 में अपने अध्ययनों के आधार पर घो षित किया कि दो वर्ष की आयु तक बालक में लगभग सभी संवेगों का विकास हो जाता है। बाल मनोवैज्ञानिकों ने शिशु में मुख्य रूप से चार संवेग माने है-भय, क्रोध, प्रेम और पीड़ा।

12. **काम-प्रवृति**-बाल-मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि शिशु में काम-प्रवृति बहुत प्रबल होती है, पर वयस्कों के समान वह उसको व्यक्त नहीं कर पाता है। अपनी माता का स्तनपान करना और यौनांगों पर हाथ रखना बालक की काम-प्रवृति के सूचक हैं।

13, **दोहराने की प्रवृति**-शिशु में दोहराने की प्रवृति बहुत प्रबल होती है। उसमें शब्दों और गतियों को दोहराने की प्रवृति विशेष रूप से पाई जाती है ऐसा करने में वह विशेष आनन्द का अनुभव करता है।

14. **जिज्ञासा की प्रवृति** (Curiosity Tendency)-शिशु में जिज्ञासा (Curiosity) की प्रवृति का बाहुल्य होता है। वह अपने खिलौने का विभिन्न प्रकार से प्रयोग करता है। वह उसको फर्श पर फेकसकता है। वह उसके भागों को अलग-अलग कर सकता है। वह बहुधा अपने खिलौनों को विभिन्न विधियों से रखने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार की क्रियाओं द्वारा वह अपनी जिज्ञासा को सन्तुष्ट करने की चेष्टा करता है। इसके अतिरिक्त, वह विभिन्न बातों और वस्तुओं के बारे में क्यों और कैसे' के प्रश्न पूछता है।

15. **अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति** (Learning by Imitation)-शिशु में अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति होती है। वह अपने माता-पिता, भाई-बहिन आदि के कार्यों और व्यवहार का अनुकरण करता है। यदि वह ऐसा नहीं कर पाता है, तो रोकर या चिल्लाकर अपनी असमर्थताः प्रकट करता है। अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति उसे अपना विकास करने में सहायता देती है।

16. **अकेले व साथ खेलने की प्रवृत्ति** (Loneliness andGregariousness) -शिशु में पहले अकेले और फिर दूसरों के साथ खेलने की प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति में होने वाले परिवर्तन का वर्णन करते हुए को एवं क्रो (Crow and Crow) (Child Psychology. p. 120) ने लिखा है- "बहुत ही छोटा शिशु अकेला खेलता है। धीरे-धीरे वह दूसरे बालकों के समीप खेलने की अवस्था में से गुजरता है। अन्त में, वह अपनी आयु के बालकों के साथ खेलने में महान् आनन्द का अनुभव करता है।"